बुनियादी कलीसिया जीवन

कलीसिया का प्रारंभिक जीवन

प्रस्तावना

आपके जीवन के लिये परमेश्वर के पास एक अद्‌भुत प्रयोजन है। आप को ले कर हर व्यक्ति के लिये जीवन में सफलता हो, जो तय होगा, अगर वे परमेश्वर का उद्‌देश्य परिपूर्ण करते हैं या नहीं, उस पर आधारित होगा । परमेश्वर के (इस) उद्‌देश्य को जानने के लिये और उसे पूरा करने के लिये हमें उसके परिवार को , कलीसिया का हिस्सा बनना सीखना पडेगा और प्रत्येक दिन यीशु के लिये जीना पडेगा। इसी बात के लिये इस अध्ययन की रचना की गयी है।

प्रत्येक पाठ के तीन हिस्से हैं :

१) पवित्र शास्त्र का अध्ययन
२) मूळभूत प्रश्न और
३) पवित्र शास्त्र को स्मरण करना।

पवित्र शास्त्र का अध्ययन आप को परमेश्वर के वचन की सच्चाई सिखायेगा। मूळभूत प्रश्न आपको इस सच्चाई को अपने जीवन में लागू करना सिखायेगा। पवित्र शास्त्र का स्मरण इस सच्चाई को आप के हृदय में छुपाने में सहायता करेगा।

इस अध्ययन में आप परमेश्वर के आत्मिक परिवार — कलीसिया के बारे में जानेंगे । आप यह भी जानेंगे के (आप के) आत्मिक परिवार में कौन कौन हैं, उस का हिस्सा किस प्रकार बन सकते हैं और आत्मिक पारिवारिक जीवन क्या है।

हर एक पाठ की शुरूआत प्रार्थना के साथ कीजिये। प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखिये। परमेश्वर से मॉगिये कि जो आप सीख रहे हैं वैसा अपना जीवन जीयें।

परमेश्वर आप को आशिषित करे जब आप उसे के वचन का अध्ययन करते हैं।

<u>**नोट :**</u> इस पुस्तिका का अध्ययन करते समय ‘‘ किंग जेम्स’’ या ‘‘न्यू किंग जेम्स’’ बाइबल का इस्तेमाल करना उत्तम है।

पाठ — १
आत्मिक परिवार

आयत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. ''हम कौन हैं'' इस विषय में यीशु ने क्या कहा ? मत्ती २३:८

२. ''हमारे आत्मिक पिता कौन हैं'' इस विषय में यीशु ने क्या कहा ? मत्ती २३:९

३. हमें परमेश्वर के परिवार में एक भाग होने के लिए किस बात की इच्छा रखनी चाहिए, ऐसा यीशु ने कहा ? मत्तीः १२:५०

४. कलोसिया को वर्णन करने के लिए कौन से दूसरे शब्द का उपयोग किया गया है ? रोमियो १२:५

५. देह का सिर कौन है ? कुलुस्सियों १:१८

६. हम यीशु मसीह के देह का भाग किस प्रकार बनते हैं ? गलतियों ३:२७—२८, १ कुरिन्थियों १२:१३

७. किस दूसरे प्रकार से परमेश्वर कलीसिया को देखता है ? १ कुरिन्थियों ३:९, इब्रानियों ३:६ १पतरस २:५,९

८. कलीसिया कौन बना रहा है ? इब्रानियों ३:४

९. अंत में कलीसिया क्या बनेगी ? २ कुरिन्थियों ११:२, प्रकाशितवाकय १९:७—८

आधारभूत प्रश्न : आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप स्वयं को परमेश्वर के परिवार के भाग के रूप में देखते हैं जो पूरे हृदय से परमेश्वर के इच्छानुसार करना चाहता है ? हाँ...........नहीं....यदि नहीं, तो इसी क्षण प्रार्थना करें और परमेश्वर से माँगे कि वह आपको पूरे हृदय से उसके इच्छा के अनुसार कार्य करने में मदद करें ।

२. क्या आपने पानी का बपतिस्मा लिया है ? हाँ......... नहीं..... यदि नहीं, तो आपके पासबान से आपको बपतिस्मा देने के लिए कहें ।

३. क्या आपने पिता परमेश्वर या यीशु मसीह के अलावा किसी और को कलीसिया के सिर के रूप में देखा है ? हाँ.......नही....... यदि हाँ, तो इसी क्षण पश्चाताप करें ऐसा करने के लिए और मसीह को कलीसिया के सिर के रूप में आदर करें।

स्मरण करें : मत्ती १२:५० को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

कलीसिया एक आत्मिक परिवार है।

पाठ २
(आत्मिक परिवार के सदस्य)

आयत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. हमारे कलीसिया का पिता और सिर कौन है ? मत्ती २३:९ कुलुस्सियों १:१८

२. हम किस प्रकार पिता बनते हैं, भले ही हम पिता नहीं बुलाए जा सकते हैं ? १ कुरिन्थियों ४:१५

३. हमारे बडे भाई और बहन कौन हैं जो हमें प्रशिक्षण देते हैं कि हम किस प्रकार यीशु मसीह के लिए जिए ? इफिसियों ४:११—१५

४. दूसरे सदस्य कौन हैं और उन्हें क्या करने के लिए बुलाया गया है, रोमियों १२:६—८, १ कुरिन्थियों १२:२८

५. एक व्यक्ति को कलीसिया में क्या स्थान है, यह निर्णय कौन लेता है ? १ कुरिन्थियों १२:१८, २ तीमुथियुस १:९

६. जिस बात के लिए हमें परमेश्वर ने बुलाया है उसको ढूंढने और पूरा करने में कौन से दो बातें हमें मदद करते हैं ? रोमियों १२:६, २ तीमुथियुस १:९

७. हमारे वरदानों और बुलाहट को निश्चित करने में हमारे बडे भाई, बहनों का क्या योगदान होता है ? १ तीमुभियुस ४:१४, २ कुरिन्थियों १३:१

८. परमेश्वर ने भेड़ों (आत्मिक परिवार) को चराने (अगुवाई) के लिए किसको बुलाया है ? १ पतरस ५:१—३

९. एक प्राचीन होने के लिए क्या योग्यताएँ होनी चाहिए ? १ तीमुथियुस ३:१—७, तीतुस १:५—९

१०. एक व्यक्ति प्राचीन कैसे बनता है ? तीतुस १:५, प्रेरितों के काम १४:२३

११. कलीसिया के सदस्यों के जरूरतों की सेवकाई के लिए परमेश्वर ने अगुवाई के लिए किसे चुना है ? प्रेरितों के काम ६:१—३, फिलिपियों १:१

१२. एक अध्यक्ष की क्या योग्यताएँ हैं ? १तीमुथियुस ३:८—१३

१३. एक व्यक्ति किस प्रकार अध्यक्ष बनता है ? प्रेरितों के काम ६:१—३

१४. कलीसिया के ऊपर जिनको परमेश्वर ने नियुक्त किया है, उनका किस प्रकार से हम पीछे चल सकते है ? इब्रानी १३:७ और १७

<u>आधारभूत प्रश्न</u> : आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. परमेश्वर के आत्मिक परिवार (कलीसिया) मे स्वयं का स्थान पाने के लिए क्या आपने परमेश्वर की खोज की है ? हाँ........... नहीं.............यदि नहीं, तो इसी क्षण ऐसा करें।

२. क्या आप परमेश्वर के अनुग्रह पर निर्भर करते हैं (अयोग्य सामर्थ और बुद्धि) या अपने योग्यताओं पर निर्भर करते है। ताकि परमेश्वर के उद्देश्य आपके जीवन में पूरा हो ? परमेश्वर का अनुग्रह ..... मेरी योग्यताएँ.... यदि आप स्वयं के योग्यताओं पर निर्भर करते हैं तो पश्चाताप कीजिए और परमेश्वर से माँगें की वह आपकी मदद करें ताकि आप उसकी इच्छा और अनुग्रह में जिएँ।

३. क्या आप का आत्मिक परिवार परमेश्वर की अगुवाई में समर्पित होता हैं और सेवकाई के लिए उन्हें अनुमति देते हैं ताकि वह आपको प्रशिक्षण दे? हाँ..... नहीं....... यदि नहीं, तो पश्चाताप कीजिए और यीशु मसीह से मांगे की वह आपको इसी वक्त एक आज्ञाकारी हृदय दें।

४. क्या आप एक आत्मिक पिता हैं जो लोगों को मसीह में लाता हो ताकि वो भी परमेश्वर का एक परिवार बनें ? हाँ..... नहीं....... यदि नहीं, तो पश्चाताप करें और यीशु मसीह से मांगे कि वह आपकी मदद करें।

<u>स्मरण करें</u> : १ कुरिन्थियों १२:१८ को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

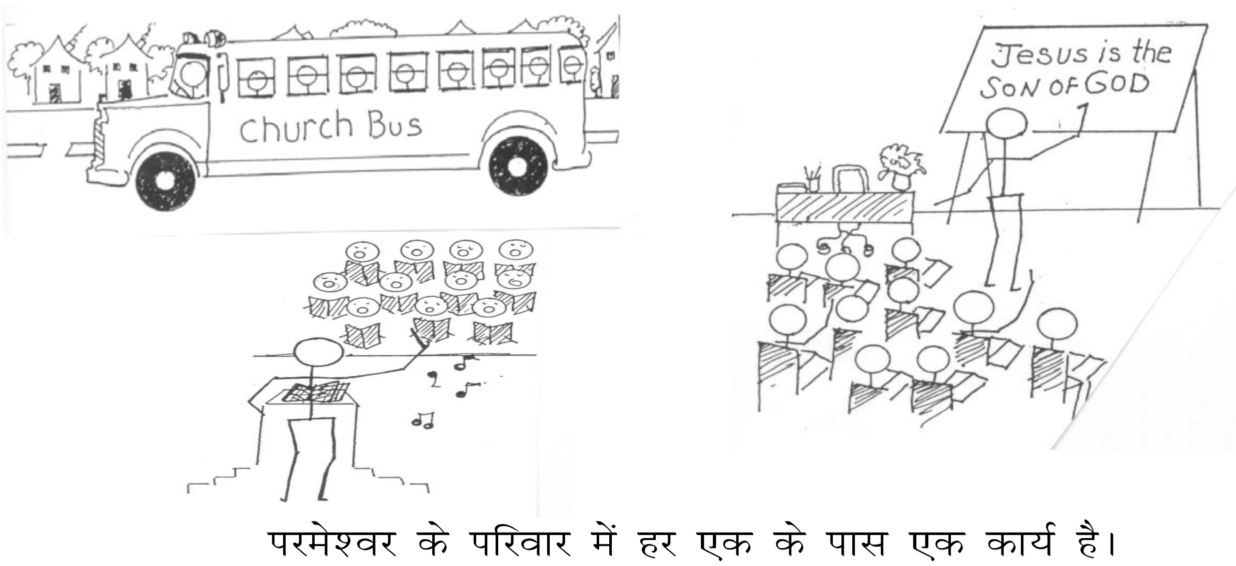

परमेश्वर के परिवार में हर एक के पास एक कार्य है।

पाठ ३
(आत्मिक परिवार कैसे बने)

<u>आयत अध्ययन</u> : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. हमारे भाई – बहनों के साथ संबंध परमेश्वर में क्या संबंध बताता है ? १यूहन्ना ४:२०–२१

२. यीशु मसीह के देह के सदस्य होने के नाते धनी और निर्धन को एक दूसरे के साथ कैसा संबंध रखना चाहिए ? याकूब १:९–१०, २:१–९, रोमियों की पत्री १२:१६, १ तीमुशियुस ६:१७–१९

३. एक जवान व्यक्ति को किस प्रकार एक बूढ़े व्यक्ति या उसी उम्र के व्यक्ति से यीशु मसीह के देह में संबंध रखना चाहिए ? १ पतरस ५:५, १ तीमुथियुस ५:१–२

४. यीशु मसीह के देह में जो सामर्थी सदस्य हैं उनकी क्या जिम्मेदारी है कमजोर सदस्यों के साथ ? रोमियों १४:१–५, २१, १५:१, १ कुरिन्थियों ८:७–१३, ९:२२, १ थिस्सलुनीकियों ५:१४

५. यीशु मसीह के देह में हमारे सदस्यों के साथ सेवकाई में हमारी क्या जिम्मेदारी हैं? २ कुरिन्थियों ८:१२–१५, ९:६–१३ याकूब २:१५–१६, १ यूहन्ना ३:१७ गलतियों ६:७–१०

६. एक संगति को तोडने के लिए क्या कारण होते है ? रोमियों १६:१७, १ कुरिन्थियों ५:४–१३, २ थिस्सलुनीकियों ३:११–१४, २ तीमुथियुस ३:१–५, २ यूहन्ना ७:११

७. यीशु मसीह के देह में सदस्यों के साथ टूटे संगति को किस प्रकार हम जोडने की खोज करते हैं ? गलतियों ६:१–२, मत्ती ७:१–५ १८:१५–२०, याकूब ५:१६–२०, २ थिस्सलुनीकियों ३:१५

८. हमारा भाई – बहनों के साथ संबंध संसार को क्या बताती है? यूहन्ना १३:३५

<u>आधारभूत प्रश्न :</u> आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. आपके भाई बहनों के साथ संबंध परमेश्वर के प्रेम के विषय में क्या बताता हैं?

२. क्या आप कलीसिया के गरीब सदस्यों को वही आदर के साथ बर्ताव करते है जो धनी के साथ ? हाँ........नहीं........यदि नहीं, तो इसी क्षण पश्चाताप करें और परमेश्वर से माँगे कि वह आपको सभी भाई – बहनों के साथ बराबर प्रेम करने में मदद करें।

३. क्या आप बडे सदस्यों को वही आदर देते है जो माता – पिता को देते है, और हम उस सदस्य के साथ भाई – बहनों के समान बर्ताव करते है ? हाँ.. .....नहीं..... यदि नहीं, तो इसी क्षण पश्चाताप करें और परमेश्वर से माँगे कि कलीसिया के सदस्यों का आदर करने में मदद करें।

४. जिनका विश्वास आपके समान सामर्थी न हों क्या आप उनको नीची नजर से देखते हैं ? हाँ.......नहीं..... यदि नहीं, तो इसी क्षण पश्चाताप करें और परमेश्वर से माँगे कि सबको वैसा ही प्रेम करे जिस प्रकार परमेश्वर करता है।

५. क्या आप दूसरे कलीसिया के सदस्यों की शारीरिक जरूरतों की सेवकाई करने की खोज करते हैं जितना आप से हो सके ? हाँ.......नहीं..... यदि नहीं, तो इसी क्षण पश्चाताप करे और संगति के पुनर्स्थापन के लिए खोज करें।

६. क्या आपने ऐसा कोई वजह से जो पवित्र शास्त्र से अलग हो, किसी दूसरे भाई या बहन से नाता तोड़ा है ? हाँ .. नहीं .... यदि हाँ, तो इसी क्षण पश्चाताप करें और संगति के पुनर्स्थापन की खोज करें।

७. जिस भाई या बहन के साथ आपकी कोई समस्या हो, क्या आपने पवित्र शास्त्र के अनुसार संगति बनाए रखने या संगति के पुनर्स्थापन के लिए सबकुछ किया है ? हाँ.......नहीं..... यदि नहीं, तो इसी क्षण पश्चाताप करें और इसी खोज करें की संगति को किस तरह बनाए रखें या पुनर्स्थापित करें भाई – बहनों के साथ।

८. दूसरे कलीसिया के सदस्यों के साथ जो आप बर्ताव करते है क्या वह संसार के लिए एक गवाही है ? हाँ.......नहीं..... यदि नहीं, तो इसी क्षण पश्चाताप करें और परमेश्वर से माँगे की दूसरे कलीसिया के सदस्यों के साथ वही बर्ताव करें जो परमेश्वर आप से चाहता हो।

<u>स्मरण करे :</u> १ तीमुथियुस ५:१–२ को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

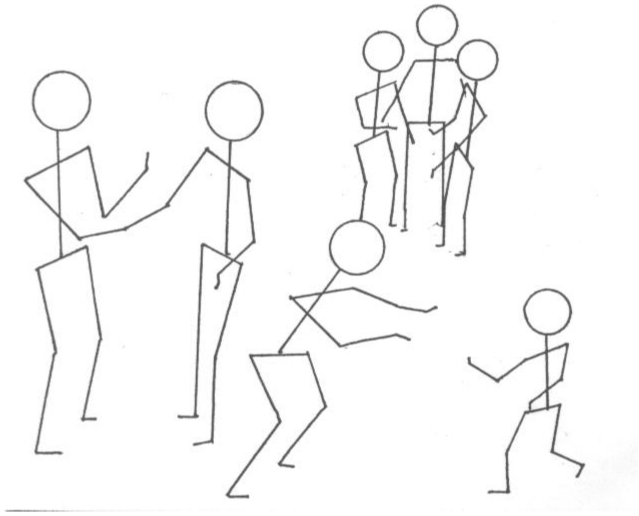

हमें परमेश्वर के परिवार के हर सदस्यों के साथ प्रेम और आदर के साथ बर्ताव करना चाहिए।

पाठ ४
(आत्मिक पारिवारिक जीवन)
भाग — १
संगति

<u>आयत अध्ययन</u> : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. कलीसिया के दूसरे सदस्यों के साथ चलने में परमेश्वर ने क्या आज्ञा दी है ? इब्रानी १०:२४—२५

२. प्राचीन कलीसिया संगति के लिए कब मिलते थे ?
प्रेरितोंके काम २:४२, ४६—४७

३. क्या दस बातें होना चाहिए उस व्यक्ति में जो कलीसिया का भाग हैं और जब वह संगति करता है ?
१ कुरिन्थियों १४:२६, १६:१—२, प्रेरितों के काम २:४२

४. दूसरे मसीहियों के साथ संगति में क्या तीन बातें जीवन में सिर्फ एक बार होना चाहिए
प्रकाशितवाक्य १९:७, ९ इब्रानियों १३:४, प्रेरितों के काम २:४१, मरकुस १०:१३—१६

५. किस प्रकार से ये होना चाहिए ? १ कुरिन्थियों १४:४०

६. जब हम संगति के लिए मिलते है तो परमेश्वर क्या करता है ? मत्ती १८:२०

<u>आधारभूत प्रश्न :</u> आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप दूसरे मसीहियों के साथ भरपूर समय संगति में व्यतीत करतें हैं ? हाँ............नहीं .... यदि नहीं, तो परमेश्वर से माँगे ताकि वह आपके जीवन को संघटित करने में मदद करें ताकि आप संगति में समय बिताने में योग्य हो।

२. जब आप संगति करते हैं तो क्या आप वह सब करते हैं जो परमेश्वर ने आपसे कहा है ? हाँ............नहीं .... यदि नहीं, तो परमेश्वर से माँगे कि जो कुछ उसने आपको करने के लिए कहा है वैसा करने में आपकी मदद करें।

३. क्या जब आप दूसरे मसीहियों से मिलते हैं तो ऐसी बातें करते हैं जो परमेश्वर नहीं चाहता ? हाँ............नहीं .... यदि नहीं, तो इसी क्षण पश्चाताप करें, ओर परमेश्वर से माँगे कि आपके जीवन को स्वच्छ करें।

४. क्या आपका संगति का समय उपयुक्त और व्यवस्थित है ताकि परमेश्वर दूसरों की सेवकाइ कर सके ? हाँ............नहीं .... यदि नहीं, तो इसी क्षण पश्चाताप करें और परमेश्वर से माँगे कि वह आपको हर काम उपयुक्त और व्यवस्थित रूप से करने में मदद करें।

<u>स्मरण करें :</u> मत्ती १८:२० को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

हमें दूसरे मसीहियों के साथ समय व्यतीत करना चाहिए ताकि हम प्रभु की सेवा के लिए उत्साहित हों ।

पाठ ४
(आत्मिक पारिवारिक जीवन)
भाग — १
संगति
(क)
स्तुति और आराधना

आयत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. हम परमेश्वर की उपस्थिति में कैसे आते हैं ? भजन संहिता १००:२,४

२. परमेश्वर कहाँ निवास करता है ? भजन संहिता २२:३

३. स्तुति और आराधना परमेश्वर के लिए क्या करते हैं ? भजन संहिता ६३:३—४

४. स्तुति और आराधना से एक आराधक को क्या मिलता है ? इफिसियों ५:१८—१९

५. जब हम परमेश्वर की आराधना करते हैं तो हमारे हृदय की स्थिति क्या होनी चाहिए ? यूहन्ना ४:२३—२४

६. स्तुति और आराधना के समय हम क्या कर सकते हैं ? भजन संहिता ६३:३—४, ९५:६, ९६:१, १४९:१, ३, ५, ६, १५०, २९:१—२

७. जब हम परमेश्वर की आराधना करते हैं तो उसके शत्रुओं का और हमारे शत्रुओं का क्या होता है ? २ इतिहास २०:१४—२४, भजन संहिता १४९:६—९

आधारभूत प्रश्न : आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप परमेश्वर की उपस्थिति में स्तुति और आराधना के द्वारा प्रवेश करने की कोशिश करते हैं ? हाँ............. नहीं....... यदि नहीं, तो परमेश्वर से माँगे की इसी क्षण वह आपको मदद करें।

२. अभी तक आप परमेश्वर की आराधना किस प्रकार से करते थे ?

३. किस नए प्रकार से आप परमेश्वर की आराधना करना शुरू कर सकते हैं ?

४. क्या आप प्रतिदिन परमेश्वर की उपस्थिति की खोज करते हैं ताकि आप पवित्र आत्मा से भरे रहें ? हाँ.............. नहीं....... यदि नहीं, तो परमेश्वर से माँगे की वह आपको आज के दिन मदद करें।

५. क्या आप अपने जीवन की समस्याओं के लिए परमेश्वर की मदद माँगते हैं, स्तुति और आराधना से उसकी खोज करते हुए ? हाँ.............. नहीं....... यदि नहीं, तो ऐसा करें।

<u>स्मरण करें :</u> भजन संहिता १००:४ को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

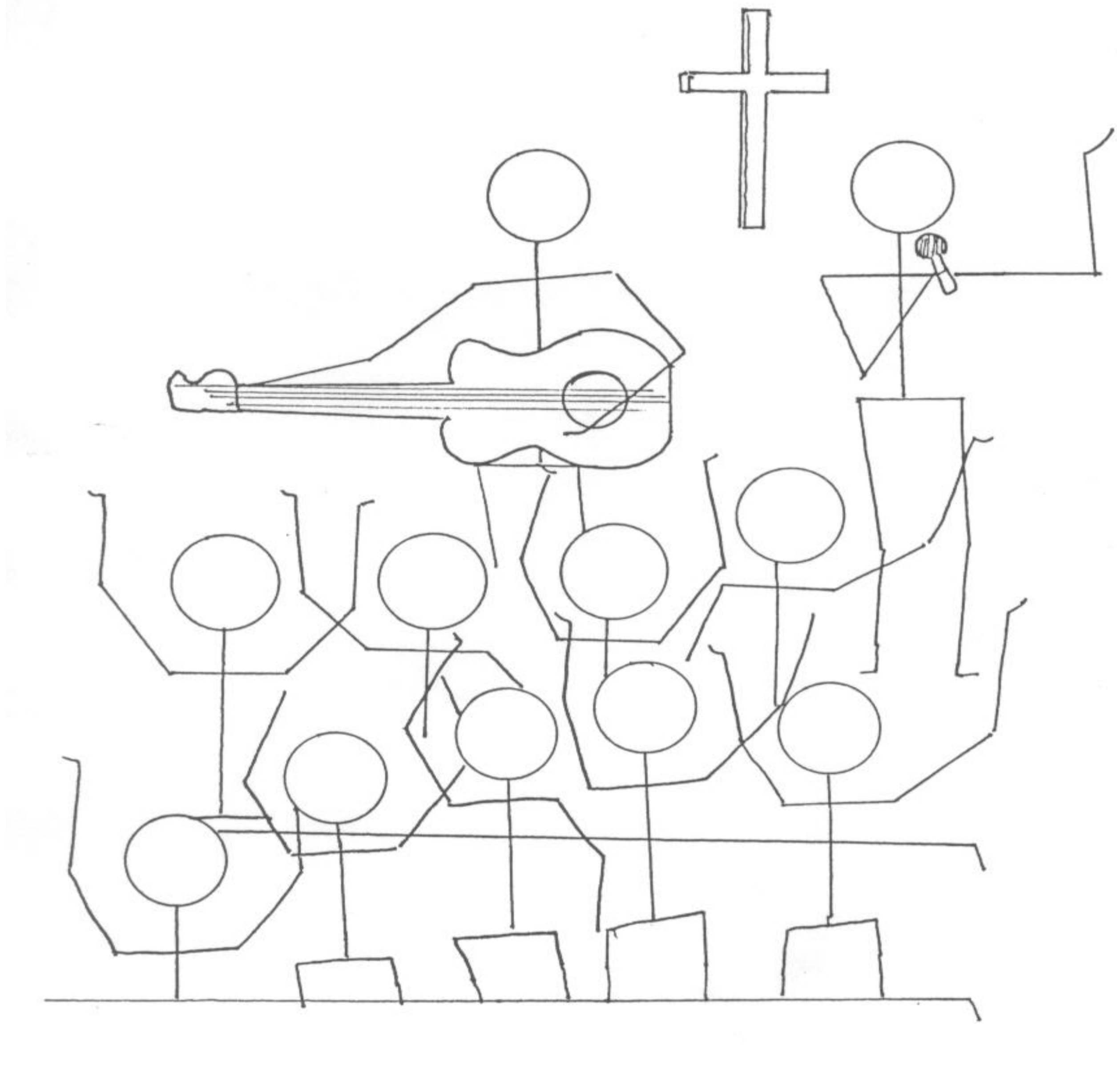

स्तुति और आराधना हमें परमेश्वर की उपस्थिति में लाती है।

पाठ ४
आधारभूत कलीसिया जीवन
भाग — १
संगति
(ख)
प्रार्थना

<u>आयत अध्ययन</u> : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. परमेश्वर ने हमें क्या दिया है ? भजन संहिता ११५:१६

२. परमेश्वर ने हमें क्या दिया है ताकि हम जिम्मेदारी ले सके ? मत्ती १८:१८—१९

३. प्रार्थना में सहमति किस प्रकार हमें परमेश्वर के कार्य को पूरा करने की योग्यताओं को बढ़ाती है ? लैव्यव्यवस्था २६:७—९

४. हमारा पहला आत्मिक अग्रता क्या होना चाहिए ? १ तीमुथियुस२:१—४

५. हमें किस प्रकार प्रार्थना करना चाहिए ? मत्ती ६:९—१३

६. जब परिस्थितियाँ हम पर हावी हो जाते हैं, तो हमें क्या करना चाहिए ? लूका १८:१

७. हमें एक दूसरे के लिए अक्सर कैसे प्रार्थना करना चाहिए ? इफिसियों ६:१८

आधारभूत प्रश्न : आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप संसार को यीशु के पास लाने की खोज करते हैं ? हाँ ...... नहीं. ....यदि नहीं , तो पश्चाताप करें और परमेश्वर से इसी क्षण मदद माँगे ।

२. क्या आप दूसरे मसीहियो के साथ प्रार्थना करते हैं ताकि आप में सामर्थ और सहमति हो कि परमेश्वर के कार्यो को पूरा करें ? हाँ ...... नही.....यदि नहीं तो आज से ऐसा करना शुरू करें ।

३. क्या आप उस प्रकार से प्रार्थना करते हैं जैसा परमेश्वर के प्रार्थना का नमूना दिया गया है ? हाँ ...... नहीं.....यदि नहीं तो इस नमूने का अध्ययन करें और आपके प्रार्थना जीवन में इसका उपयोग करें।

४. क्या आप समस्याओं के समय दूसरों के साथ प्रार्थना को परमेश्वर का एक स्रोत मनाते हैं ? हाँ ...... नहीं.....यदि नहीं तो परमेश्वर से इसी क्षण परमेश्वर से मांगे कि इस बात को आपके लिए सच्चाई बना दें।

५. क्या आप दूसरे कलीसिया के सदस्यों के साथ मिलकर खोए हुए मित्रों के लिए और पडोसियों के लिए प्रार्थना करते हैं ? हाँ ...... नहीं.....यदि नहीं तो एक सूची बनाकर आज से ऐसा करना शुरू करें ।

६. क्या आपकी कलीसिया एक दिन के २४ घंटे और एक हफ्ते के ७ दिन प्रार्थना समूह में भाग लेती है ? हाँ ...... नही.....यदि नहीं तो आज से ऐसा करना शुरू करें ।

स्मरण करें : **मत्ती १८:१८—१९** को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

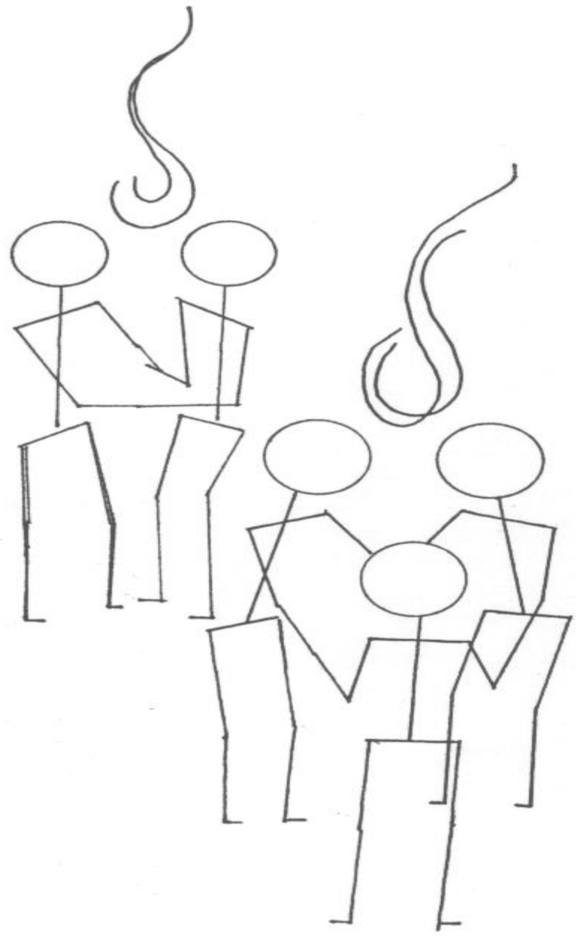

जब हम मिलकर प्रार्थना करते हैं तो इस में ज्यादा सामर्थ होता है।

पाठ—४
आत्मिक पारिवारिक जीवन
भाग — १
संगति
ग
शिक्षा

आयत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. आखिरी आज्ञा जो यीशु मसीह ने दिया वह क्या था ?
मत्ती २८:१९—२०

२. हमें शिक्षा की जरूरत क्यों है ? तीतुस ३:१४, कुलुस्सियों १:२८

३. हमें कौन मदद करता है जब हमें परमेश्वर की बातों की शिक्षा मिलती है? यूहन्ना १६:१३

जो बातों की शिक्षा परमेश्वर देता है उसके प्रति हमारा प्रतिउत्तर क्या होना चाहिए ?

४. जब हम परमेश्वर को हमें शिक्षा देने की अनुमती देते हैं तो क्या होता है? नीतिवचन ९:९

५. मसीह के देह को क्या होता है जब हमें उचित रूप से परमेश्वर का वचन सिखाया जाता है ? इफिसियों ४: ११—१६

६. जो बातें परमेश्वर सिखाता है उसके द्वारा हमें क्या करना चाहिए ?
२ तीमुथियुस २:२

आधारभूत प्रश्न : आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप यह इच्छा रखते हैं कि आप परमेश्वर के लिए उपयोगी पात्र बनें ताकि दूसरों को मसीह के लिए जीना सिखाएँ ? हाँ ..... नहीं .... यदि नहीं, तो परमेश्वर से इसी क्षण मांगे कि वह आपको दूसरों को शिक्षा देने की इच्छा दे और अभिषेक भी ताकि आप उनको सिखा सकें।

२. क्या आप अनुमति देते हैं कि परमेश्वर का वचन आप में बड़े रूप से वास करें और उसमें आज्ञाकारिता से बढ़े? हाँ ... नहीं .... यदि नहीं, तो इसी क्षण पश्चाताप करें और परमेश्वर से ऐसा करने की मदद माँगे।

३. क्या आप परमेश्वर को मार्गदर्शन के लिए अनुमति देते है उसकी योजना और उद्देश्य के लिए जैसे आप वचन सिखाए जाते हैं ? हाँ... नहीं.... यदि नहीं तो इसी क्षण पश्चाताप करें ओर परमेश्वर से मांगे कि वह आपको जीवन के लिए उसकी इच्छा को दिखाए जैसे आप उसके वचन का अध्ययन करते है।

स्मरण करें : **तीतुस ३:१४** को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

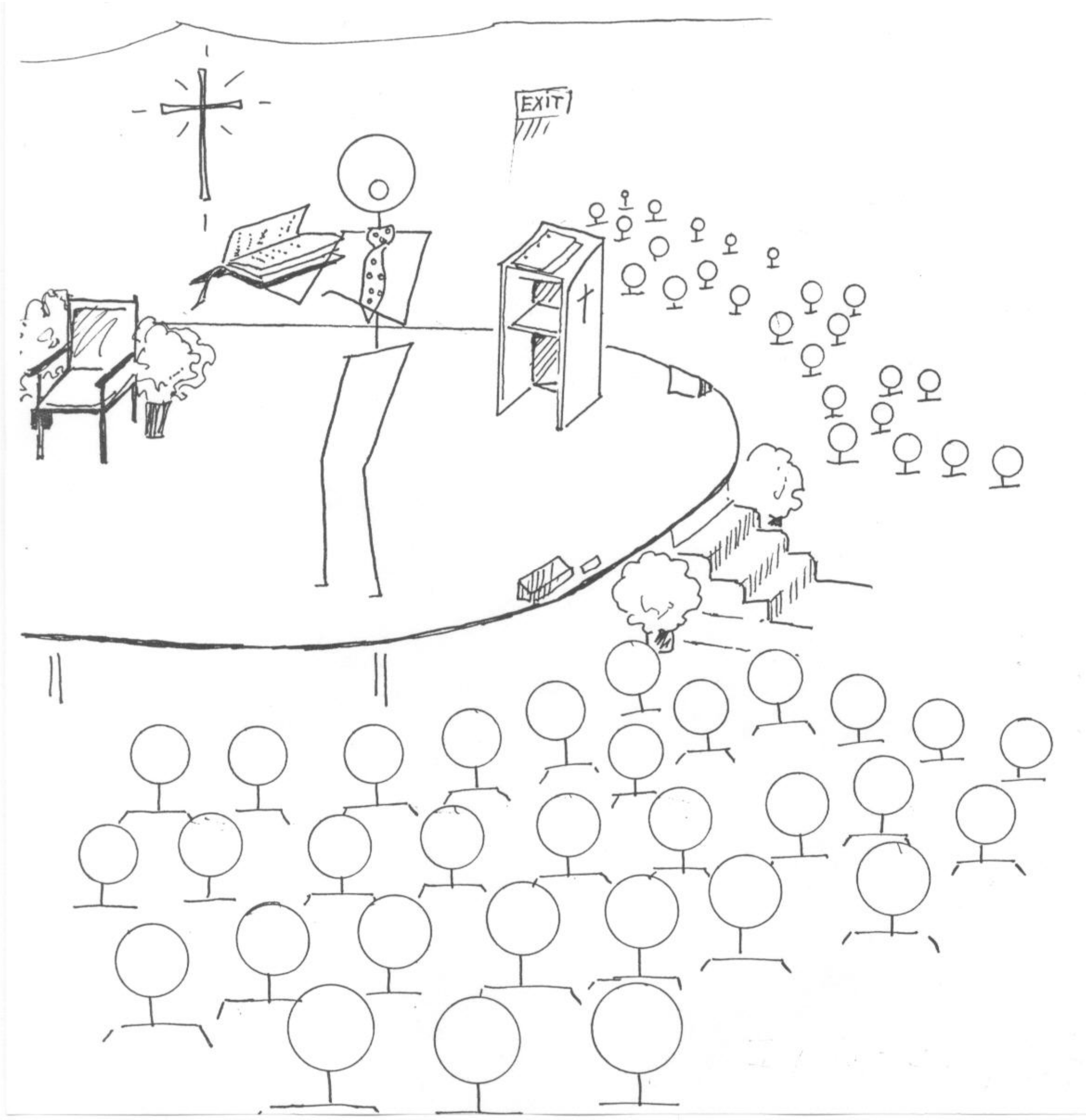

हमें शिक्षा की जरूरत है
ताकि हम जानें कि परमेश्वर की सेवा कैसे करें
आधारभूत कलीसिया जीवन

पाठ—४
आत्मिक पारिवारिक जीवन
भाग—१
संगीत
घ और ङ.
अन्य भाषा और उसका अनुवाद

आयत अध्ययन :जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. एक सामुहिक सभा में अन्य भाषा का उपयोग क्यों किया जाता है ? १ कुरिन्थियों १४:२२

२. पिन्तेकुस्त के दिन क्या हुआ जब अन्य भाषा का उपयोग हुआ ? प्रेरितों के काम २:४—४१

३. एक व्यक्ति जो अन्य भाषा में संदेश दे रहा हो उसे क्या करना चाहिए ? १ कुरिन्थियों १४:१३

४. यदि अन्य — भाषा का अनुवाद न हो तो क्या करना चाहिए ? १ कुरिन्थियों १४:२८

५. अन्य भाषा और अनुवाद के वरदान का कितना उपयोग होना चाहिए ? १ कुरिन्थियों १४:२७

आधारभूत प्रश्न : आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या परमेश्वर ने आपको अन्य भाषा का वरदान दिया है ताकि आप अविश्वासियों की सेवकाई कर सकें ? हाँ..... नहीं ......

२. क्या आपने अन्य–भाषा के अनुवाद के लिए प्रार्थना किया है ? हाँ ... नहीं .... यदि नहीं तो इसी क्षण परमेश्वर की सेवा के लिए स्वयं को सौंपते हुए ऐसा करें।

३. क्या आपके सेवकाई में अन्य– भाषा का अत्यधिक उपयोग होता है ? हाँ..... नहीं ...... यदि हाँ, तो इसी क्षण प्रार्थना करें कि अन्य भाषा का उपयोग सही प्रकार से होगा।

४. यदि अनुवादक न हो तो क्या आप शांत रहते हैं ? हाँ..... नहीं ...... यदि नहीं तो अभी से ऐसा करें ।

स्मरण करें : **१ कुरिन्थियों १४:२२** को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

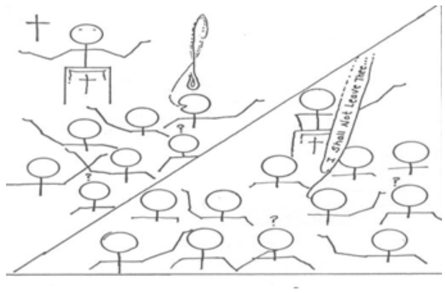

अन्य भाषाएँ और उसका अनुवाद एक अविश्वासी
के लिए गवाही का कारण होता है।

बुनियादी कलीसिया जीवन
पाठ—४
आत्मिक पारिवारिक जीवन
भाग—१
संगति
(च)
प्रकाशन

आयत अध्ययन :जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. किस आत्मिक वरदान की सबसे ज्यादा इच्छा रखनी चाहिए ? १ कुरिन्थियों १४:१

२. सच्ची भविष्यवाणी दूसरों के लिए क्या करती है ? १ कुरिन्थियों १४:३

३. सच्चा भविष्यवाणी कहाँ से आता है? २ पतरस १:२१

४. सच्ची भविष्यवाणी किसकी गवाही देती है ? प्रकाशितवाक्य १९:१०

५. गलत भविष्यवाणी किसको दर्शाती है ? २ पतरस २:१—३, १८—१९

६. कलीसिया में दूसरे किस प्रकाशन को हम पाते हैं १ कुरिन्थियों १२:८

आधारभूत प्रश्न : आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१.	क्या आप भविष्यवाणी के वरदान की इच्छा रखते है ? हाँ ....नहीं.... यदि नहीं, परमेश्वर से इसी क्षण मांगे कि वह आपको भविष्यावणी करने की इच्छा दें ताकि आप दूसरों की सेवकाई कर सकें ।

२.	क्या आप भविष्यवाणी को जाँचते हैं कि वह सही है या गलत है ? हाँ ....नहीं....यदि नहीं, तो इसी क्षण ऐसा करना शुरू करें ।

३.	क्या आप बुद्धि और ज्ञान के वचन को अपने जीवन में कार्य करने देते हैं ? हाँ ....नहीं... तो इस दिन से शुरू करें ।

<u>स्मरण करें</u> : **१ कुरिन्थियों १४:१** को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

भविष्यवाणी हमें उत्साहित करती है, सांत्वना देती है, और हमें प्रभु में बढ़ाती है।

बुनियादी कलीसिया जीवन
पाठ—४
आत्मिक पारिवारिक जीवन
भाग—१
संगति
(छ)
प्रभु भोज

आयत अध्ययन :जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. किसने हमें प्रभु भोज दिया और क्यों ? १ कुरिन्थियों ११:२३—२६

२. हमें प्रभु भोज में सहभागिता लेने से पहले क्या करना चाहिए ? १ कुरिन्थियों ११:२७—३१

३. प्रभु — भोज के साथ साथ हमें क्या करना चाहिए जो यीशु मसीह ने हमें दिखाया ? यूहन्ना १३:१—१७

आधारभूत प्रश्न : आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप प्रभु—भेज लेते हैं ताकि यीशु मसीह ने आपके लिए जो किया है आप उसका स्मरण करें ? हाँ ... नहीं.... यदि नहीं, तो ऐसा करना शुरू करें ।

२. क्या आप प्रभु भोज लेने से पहले अपने ह्दय को जाँचते हैं ? हाँ ... नहीं... . यदि नहीं, तो अभी से ऐसा करना शुरू करें।

३. क्या आप एक दूसरे के पैर को धोना स्वयं को प्रभु—भोज के लिए तैयार करने का एक जरिया और एक — दूसरे के प्रति सवेक ह्दय रखने का चिन्ह समझते हैं? हाँ.... नहीं..... यदि नहीं, तो अभी से ऐसा करना शुरू करें।

स्मरण करें : **१ कुरिन्थियों ११:२६** को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को ह्दय मे_छुपाएँ।

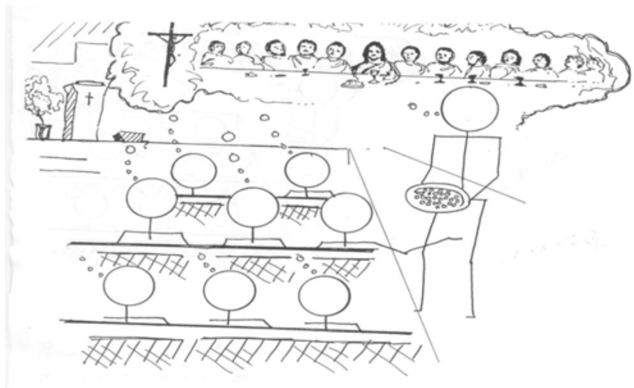

प्रभु का भोज यीशु मसीह ने जो हमारे लिए किया उसकी याद दिलाती है।

पाठ ४
आत्मिक पारिवारीक जीवन
भाग १
संगति
(ज)
उत्सव मनाना

आयत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. पर्व क्या होता है ? लैव्यव्यवस्था २३:२

२. जब हम उत्सव मनाने इकट्ठे आते हैं तो हमारी मनोवृत्ति क्या होनी चाहिए ? १ कुरिन्थियो ५:८

३. जब हम इकट्ठे आते हैं तो सच्चे संगति के लिए किस बात की जरूरत है ? १यूहन्ना १:१—३, ६—७

४. कलीसिया के सदस्यों के साथ हमें किनको उत्सव में निमंत्रण देना चाहिए ? लूका १४:१३—१४

आधारभूत प्रश्न : आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप विशेष समय को अलग रखते हैं ताकि परमेश्वर के कार्य को मनाया जा सके ? हाँ...... नहीं... यदि नहीं, तो आज से ऐसा करना शुरू करें। खास समय जैसे क्रिस्तमस, पुनरूत्थान रविवार, जन्मदिन, और सालगिरह ऐसे समय हो सकते हैं जहाँ हम परमेश्वर के लिए उत्सव मना सकते हैं।

२. क्या आपका उत्सव परमेश्वर पर केंद्रस्थित है और उसने जो कुछ किया है उसके लिए है ? हाँ...... नहीं... यदि नहीं, तो अभी से उत्सव में परमेश्वर को केंद्र — स्थान बनाएँ।

३. जब आप उत्सव मनाते हैं तो क्या आप उन लोगों को निमंत्रण देते हैं जो जरूरत में है ? हाँ...... नहीं... यदि नहीं, तो परमेश्वर से मांगे कि अब से परमेश्वर आपको यह करने में मदद करें ।

<u>**स्मरण करें :**</u> **१ यूहन्ना १:७** को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

उत्सव के समय हमें यीशु मसीह के कार्यों को स्मरण करना चाहिए।

पाठ — ४
आत्मिक पारिवारिक जीवन
भाग—१
संगति
(झ)
देना

आयत अध्ययन :जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. महान भेंट किसने दिया है? यूहन्ना ३:१६

२. परमेश्वर के भेंट के द्वारा हमें वह क्या देता है ? रोमियों ८:३२

३. परमेश्वर हम से क्या मांगता है ताकि वह हमें आशीष दे ? मलाकी ३:१०

४. पूर्वकाल में मसीही क्या देते थे ताकि सुसमाचार का प्रचार हो ? प्रेरितों के काम २:४४—४५, ४:३२

५. यीशु मसीह ने दशवांस और भेंट के विषय में क्या कहा ? मत्ती २३:२३

६. हमें पहले परमेश्वर को क्या देना चाहिए? २ कुरिन्थियों ८:२

७. जब हम देते हैं तो हमारे हृदय कि दशा कैसी होनी चाहिए ? २ कुरिन्थियों ९:७

८. हमारे देने के पीछे क्या नियम होना चाहिए ? २ कुरिन्थियों ८:१२—१५

९. हम जिस प्रकार काम करते हैं यह उस पर किस प्रकार प्रभाव डालता है? इफिसियों ४:२८

१०. हमारे देने के द्वारा परमेश्वर क्या करने की कोशिश करता है? २ कुरिन्थियों ८:१३—१५

११. हमें अपना दशवांस किसे देना चाहिए ? गलातियों ६:६, १ तीमुथियुस ५:१७—१८

१२. हमें मनुष्यों को भेंट कब देना चाहिए ? गलातियों ६:१०, नीतिवचन ३:२७—२८

१३. परमेश्वर के कार्य के लिए हमें दशवांस और भेंट कब देना चाहिए? १ कुरिन्थियों १६:२

१४. देने के विषय में परमेश्वर का वादा क्या है ? सभोपदेशक ११:१,२ कुरिन्थियों ९:६

१५. विश्वासयोग्यता से देने से हमें क्या प्राप्त होता है ? २ कुरिन्थियों ९:८

आधारभूत प्रश्न : आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप महसूस करते हैं कि जो भी वस्तु से आप आशीषित किए जाते हैं वह परमेश्वर की ओर से आता है ? हाँ.... नहीं.... यदि नहीं, तो परमेश्वर से मांगे कि इस सच्चाई को आपके लिए इसी क्षण सत्य बना दें।

२. क्या आप महसूस करते है कि आपको देने की जरूरत है ताकि आप पूरे रूप से आशीष पाएँ? हाँ.... नहीं.... यदि नहीं, तो परमेश्वर से मांगे की यह सच्चाई इसी क्षण आपके लिए सत्य बन जाए।

३. क्या आप पवित्र आत्मा के नेतृत्व में देने की खोज करते हैं ताकि सुसमाचार फैले बजाय इसके की आप उनको देते हैं, जो आपको अच्छे लगें ? हाँ.... नहीं.... यदि नहीं, तो परमेश्वर की बुद्धि और दिशा की खोज करने इसी क्षण से देना शुरू करें।

४. क्या आप वेतन का दस प्रतिशत अपने स्थानीय कलीसिया को देते हैं ताकि वह सेवकाई का कार्य सक्षमता से करें ? हाँ.... नहीं.... यदि नहीं, तो इसी क्षण ऐसा करना शुरू करें।

५. क्या आप भेंट दशवांस के उपर देते हैं ताकि मिशन कार्य और दूसरे विशेष जरूरतें पूरी हो जाएँ ? हाँ.... नहीं.... यदि नहीं, यदि नहीं तो अब से ऐसा करना शुरू करें ।

६ .क्या आप जीवन हर्षित मनोवृति से जीते हैं बजाय इसके की आप इसलिए ऐसा करते हैं क्योंकि आप महसूस करते हैं कि आपको ऐसा करना है ? हाँ.. .. नहीं.... यदि नहीं, तो पश्चाताप कर परमेश्वर से माँगे कि वह इसी क्षण आपको हर्षित बनाएँ ।

स्मरण करें : **मलाकी ३:१०** को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को

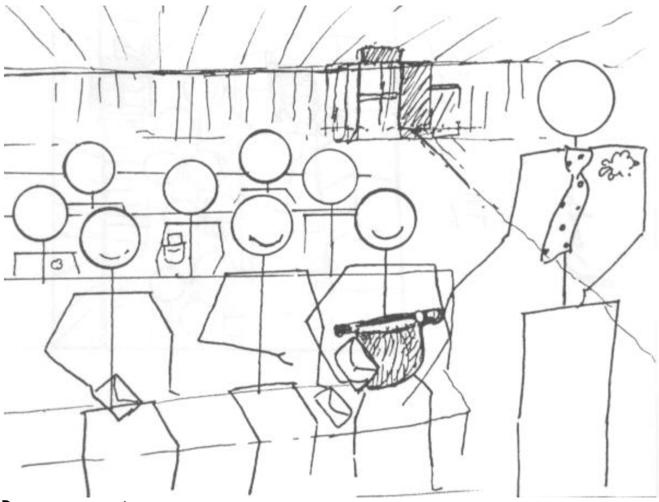

हृदय मे_छुपाएँ।

हमें जितना हो सके देना चाहिए ताकि परमेश्वर के परिवार की जरूरतें पूरी हों ।

पाठ — ४
बुनियादी क्लीसिया जीवन
भाग—१
आत्मिक पारिवारीक जीवन
संगति
(ट)
सेवकाई

<u>**आयत अध्ययन**</u> : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. मनुष्य के उन तीन भागों का नाम बताएँ जिनकी सेवकाई होनी चाहिए? १ थिस्सलुनीकियों ५:२३

२. हमारी सेवकाई में किसे अग्रता दिया जाना चाहिए ? गलतियों ६:१०

३. हमें एक व्यक्ति को किस प्रकार देखना चाहिए ताकि उनकी सेवकाई ठीक प्रकार से हो ? २ कुरिन्थियों ५:१६, १ कुरिन्थियों २: १३—१६

४. हमारे हृदय की मनोवृति कैसी होनी चाहिए जब हम दूसरों की सेवकाई करते हैं ? १ कुरिन्थियों ८:१, १६:१४

५. परमेश्वर ने क्या दिया है जो आत्मा और प्राण की सेवकाई के लिए सामर्थ देती है ? इब्रानियों ४:१२

६. हम आत्मा और प्राण की सेवकाइ परमेश्वर के वचन से किस प्रकार करते हैं ? २ तीमुथियुस ३:१६ ४:२

७. पवित्र आत्मा हमें कौन से आत्मिक वरदान देता है ताकि हम वचन की सेवकाई करें? १ कुरिन्थियों १२: ८ और १०

८. आत्मा और प्राण के साथ हमें और किसकी सेवकाई करनी चाहिए ? याकूब २:१५—१६, ५:१४—१५, १ कुरिन्थियों १२:९

९. दूसरों की सेवकाई को लेकर परमेश्वर क्या आज्ञा देता है ? नीतिवचन ३:२७—२८

१०. जब हम दूसरों की सेवकाई करते हैं तो हमें किस बात की खोज करनी चाहिए ? मत्ती ५:१६, १ कुरिन्थियों ४:१२, १०:३१—३२

आधारभूत प्रश्न : आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. जब आप दूसरों की सेवकाई करते हैं, क्या आप पूर्ण मनुष्य की सेवकाई करने की खोज करते हैं? हाँ....नहीं.... यदि नहीं तो पश्चाताप करें और आज से ऐसा करना शुरू करें।

२. क्या आप दूसरों की सेवकाई करने से पहले अपने आत्मिक परिवार के सदस्यों की सेवकाई करते हैं ? हाँ....नहीं.... यदि नहीं तो पहले सन्तों की सेवकाई करना शुरू करें।

३. क्या आप लोगों की सेवकाई आत्मिक आँखों से या स्वयं की समझ से करते हैं ? यदि स्वयं की समझ से करते हैं तो पश्चाताप करें और परमेश्वर से माँगे कि वह आपको आत्मिक आँखों से लोगों की सेवकाई करने में मदद करें।

४. क्या आप परमेश्वर के वचन को हर संभव तरीके से आत्मा और प्राण की सेवकाई के लिए करते हैं जिन्हें परमेश्वर ने आपकी सेवकाई के लिए भेजा है ? हाँ....नहीं.... यदि नहीं तो आज से ऐसा करना शुरू करें।

५. क्या आप सेवकाई चिन्ता या प्रेम की वजह से करते हैं या एक धार्मिक काम या स्वयं की महिमा के लिए करते हैं ? यदि धार्मिक या स्वयं की महिमा के लिए करते हैं तो इसी क्षण पश्चाताप करें और परमेश्वर से मांगे कि वह आपको सेवकाई के लिए प्रेम का हृदय दें।

६. क्या आप जितना जल्दी हो सके सेवकाई करते हैं या उसे अलग रखते हैं । यदि आप उसे अलग रखते है तो इसी क्षण पश्चाताप करें और परमेश्वर से मांगे कि वह आपके सेवकाई परिस्थितियों में आपको अनुशासित करे।

७. क्या आप दूसरों की उन्नति की खोज करते हैं और परमेश्वर को महिमा देते हैं जब सेवकाई करते हैं ? हाँ....नहीं.... यदि नहीं तो पश्चाताप करें और परमेश्वर से मांगे कि वह आपको सेवकाई का हृदय दें।

स्मरण करें : **मत्ती ५:१६** को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

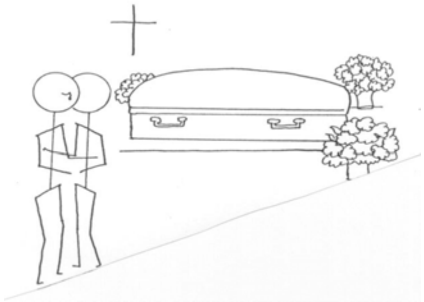

हमें आत्मिक, मानसिक, भावुक, शारीरिक और लोगों की जरूरतों के लिए सेवकाई करना चाहिए ।

बुनियादी कलीसिया जीवन
पाठ—४
आत्मिक पारिवारिक जीवन
भाग — २
सुसमाचार प्रचार

<u>आयत अध्ययन</u> : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. कलीसिया के लिए यीशु मसीह का आखरी कथन क्या था ? मत्ती २८:१८—२०

२. यीशु मसीह की आज्ञा को करने के लिए हमें क्या करना चाहिए ऐसा यीशु ने कहा ? प्रेरितों के काम १:८

३. हमें प्रतिदिन क्या करना है ताकि मसीह की गवाही के लिए हम सामर्थ प्राप्त करें ? प्रेरितो के काम ४:३१

४. किस प्रकार की प्रार्थना गवाही देने में मदद करता है ? १ तीमुथियुस २:१—४ लूका १८:१

५. हमें गवाही देने के लिए वचन के साथ क्या करना है ? १ यूहन्ना १:१—३

६. जैसे हम गवाही देते हैं हमारी मनोवृत्ति क्या होनी चाहिए ? भजन संहिता १२६:५—६, २ तीमुथियुस २:२४—२६

७. यीशु मसीह ने जब गवाही दी तो क्या दस बातें उसने किया ? यूहन्ना ४:५—२६

८. पवित्र आत्मा खोए व्यक्ति के साथ किन तीन बातों में व्यवहार करता है ? यूहन्ना १६:७—११

९. हमें क्या बाँटना चाहिए, कहाँ बाँटना चाहिए और फल का निश्चय किन बातों से होता है? प्रेरितों के काम २०:२१, और लूका ८:५—८, ११—१५ के अनुसार ?

१०. वचन को बाँटने के अलावा, हमें गवाही देते समय क्या करना चाहिए ? मत्ती १०:७—८

११. किन दो काम करने के ढंग हमें उपयोग करना चाहिए जैसे हम गवाही देते हैं ? यहूदा २२—२३

१२. रोमियों ३:२३, ६:२३, ५:८, २:४, १०:९—१० और ६:१७—१८ के अनुसार सुसमाचार संदेश क्या है ?

१३. जब हम गवाही देते हैं तो किन दो बातों से हमें दूर रहना है ? तीतुस ३:४—९, २ कुरिन्थियों ४:१—६

१४. हमें गवाही देते समय क्या नहीं करना चाहिए ? गलातियों ६:९

१५. हमारे गवाही को लेकर परमेश्वर का वादा क्या है ? यशायाह ५५:१०—११

१६. यीशु मसीह ने किस प्रकार लोगों को गवाही के लिए भेजा ? लूका १०:१—२

१७. पूर्वकालीन कलीसिया किस प्रकार गवाही देती थी ? प्रेरितों के काम २:३२, ४:३१, ८:४

<u>आधारभूत प्रश्न :</u> आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप एक गवाह हैं ? हाँ .... नहीं ..... यदि नहीं, तो प्रार्थना करें और आज से यीशु मसीह को बाँटना शुरू करें हर अवसर मिलने पर।

२. क्या आपकी कलीसिया के जीवन का एक भाग स्थानीय सुसमाचार प्रचार होता है ? हाँ .... नहीं ..... यदि नहीं, तो प्रार्थना करना शुरू करें कि आपके कलीसिया के अगुवा इसे अपने सेवकाई का एक भाग बना लें।

३. क्या आपकी कलीसिया संसार के मिशन कार्यों से जुडी है, उन्हें स्रोत और लोगों को भेजकर उनकी मदद करने में ? हाँ .... नहीं ..... यदि नहीं, तो प्रार्थना करें की आपके कलीसिया के अगुवा इसे अपने सेवकाई का एक भाग बना दें ।

४. जिस सुसमाचार संदेश को आपकी कलीसिया महत्व देती है क्या वह रोम में जैसा होता था वैसा है ? हाँ .... नहीं ..... यदि नहीं, तो प्रार्थना करें कि

आपकी कलीसिया इन सब बातों पर महत्व डालें और उन्हें बाँटे जब भी अवसर मिलें।

५. क्या आपकी कलीसिया दुनिया के मिशन कार्यो के लिए और आपके समुदाय मे खोए हुओं के लिए प्रार्थना करती है ? हाँ .... नहीं ..... यदि नहीं, तो आप संगति के सदस्यों को उत्साहित करना शुरू करें ताकि वे दुनिया के मिशन कार्यों और खोए हुओं के लिए प्रार्थना करें।

६ .क्या जब आप फल नहीं देखते तब भी गवाही देते रहते हैं ? हाँ .... नहीं .. ... यदि नहीं, तो परमेश्वर से माँगे कि वह आपको इस क्षेत्र में विश्वासयोग्य बनाएँ।

<u>**स्मरण करें : प्रेरितों के काम २०:२१**</u> को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

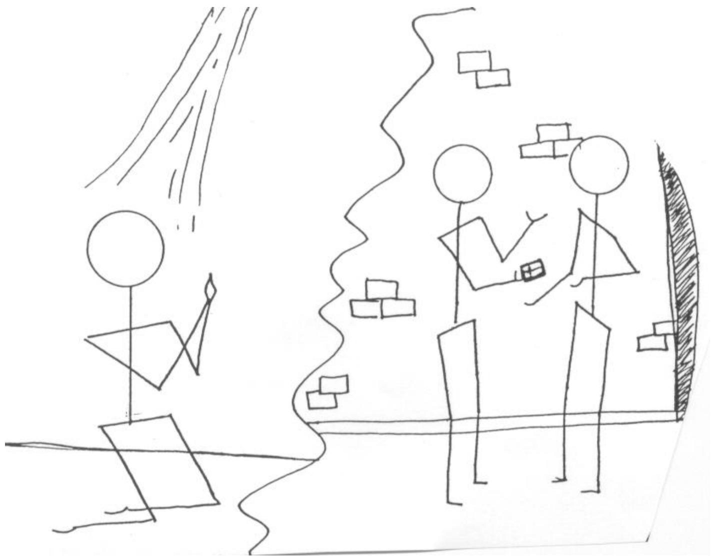

<u>हमें प्रार्थना करना चाहिए ताकि गवाही देने के लिए हमें सामर्थ मिले।</u>

BASIC INSTITUTE REQUEST FORM

यदि आप आगे का प्रशिक्षण अंग्रेजी में चाहते हैं, तो कृपया हमसे संपर्क करे।

NAME ____

ADDRESS ____

CITY___________ STATE______________ ZIP_________

COUNTRY_____________________

HOME PHONE ________________________

I would like to train in English.

WORK PHONE __________________________

Please send me the BASIC Institute Catalog.

CELL PHONE ___________________________

BEEPER _______________________

FAX _____________________________

EMAIL ______________________________

I have a prayer request.
(Please put on back)

Mail To:

BASIC Institute
P.O. Box 431
Kiln, MS 39556 U.S.A.
Or
Phone (228) 255-9251 / Fax (228) 255-8927
Email basic@basicministries.com
Web page www.basicministries.com

यदि आप इस अध्ययन से (आशिषित) हुए हैं तो किसी के साथ इसकी प्रतिलिपि को बाँटे।

प्रकाशक से सीधा प्राप्त । अंग्रेजी में लिखकर हमें अवश्य बतायें आप किस भाषा में चाहते हैं।

WRITE TO:

BROTHERS & SISTERS IN CHRIST
P.O. BOX 431
KILN, MS 39556
U.S.A.

Phone (228) 255-9251

Fax (228) 255-8927

Copies are available by Email
Send your request to basic@basicministries.com
Or
Visit our web site
www.basicministries.com

COPIES ARE AVAILABLE IN OTHER LANGUAGES.
CONTACT US FOR MORE INFORMATION.

कलीसिया क्या है — इस के बारे में आपने आश्चर्य किया है ?

क्या आप जानना चाहते हैं कि परमेश्वर के परिवार का हिस्सा सही में कैसे बन सकते है ?

क्या आप जानना चाहते हैं कि यीशु में एक स्थिर और विजयी जीवन कैसे जी सकते हैं ?

क्या आप अपने मित्र से या प्रियजन से बाँटना चाहते हैं कि परमेश्वर के परिवार का हिस्सा कैसे बना जाए ?

।। तब तो यह किताब आप ही के लिये है ।।

भाई हेनरी पल्सीफर द्वारा संकलित

और

पॉला मिंगुची द्वारा चित्रित

आपको सफल और विजयी जीवन जीने में सहायता करने हेतू अध्ययन की श्रृंखला की यह प्रथम रचना है। भाई हेनरी ने ५० से अधिक वर्षो तक यीशु के लिये जीने से विजय का अनुभव किया है। साथ ही क्रूस के साथ चलने से उन्हे केंसर से भी चंगाई मिली है। चँगाई मिलने के बाद उन्हों ने संसार की यात्रा की, जिस में उन्होंने यीशु को बाँटा और औरों को सिखाया कि यीशु के लिये जीने से विजय और सफलता कैसे प्राप्त की जाती है , जिससे परमेश्वर का उद्‌देश्य उनके जीवन में कैसे पूरा होता है।

अपने इन अनुभवों पर आधारित लेखों का संकलन उन्होंने किया है, जिससे पवित्र शास्त्र के मूल सिध्दांतो को लोगों को समझने में और उनके मुताबिक जीवन जीने में सहायता हो, जिससे (लोगोंको) उन्हे एक सफलतापूर्ण, विजयी जीवन प्राप्त हो। इस विशेष अध्ययन की रचना , पारिवारिक जीवन के लिये, परमेश्वर के सिध्दांतो को समझने में सहायता करने के लिये की गयी है। इस से आपके निजी जीवन में भी , (परमेश्वर का) (धार्मिक) व्यक्ति बनने में और प्रत्येक दिन यीशु के लिये जीने से आप को सफलता और विजय की प्राप्ति होगी। इस के उपयोग से आप औरों को पारिवारिक जीवन के बारे में सीखा सकेंगे और, व्यक्तिगत और सामुदायिक अध्ययन के लिये भी कर पायेंगे।

प्रतिलिप्यधिकार १९९० सर्व हक सुरक्षित

इस अध्ययन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक की अनुमति के बिना छापना नहीं है।
अतिरिक्त , कुछ हिस्से छापने के बाद मुफ्त में बाँटे जाए।
मूल स्त्रोत को उचित प्रमाण देना आवश्यक है।

PUBLISHED BY:

BROTHERS & SISTERS IN CHRIST
P.O. Box 431
Kiln, MS 39556
USA

Phone (228) 255-9251
Fax (228) 255-8927
Email basic@basicministries.com
On the web at www.basicministries.com